चतुर्थ अध्याय

चतुर्थ अध्याय

“ ‘बिस्रामपुर का संत’ उपन्यास में भाषा-शैली का अनुशीलन। ”

प्रस्तावना -

उपन्यास का चौथा तत्व है भाषा-शैली। संकुचित अर्थ में प्राय: भाषा का पृथक और सैद्धांतिक महत्व होता है। परंतु व्यापक अर्थ में उपन्यास के अन्य महत्त्वपूर्ण तत्व भी इसी के अंतर्गत आ जाते हैं।

पाठक, लेखक एवं पात्रों के विचार समझाने के साधन के रूप में भाषा का प्रयोग उपन्यास में किया जाता है। भाषा का आकर्षण ही पाठकों को उपन्यास पढ़ने और उसमें रूचि लेने को बाध्य करता है। भाषा को आकर्षक बनाने हेतु लेखक अलंकार, लोकोक्तियाँ आदि का प्रयोग करता है। अत: भाषा में रोचकता का होना अनिवार्य होता है। भाषा के बारे में प्रतापनारायण टंडन लिखते है कि “उपन्यास जिस समग्र रूप में समाज का चित्रण करता है, उसके लिए भाषा के सघन प्रयोग की उसी सीमा तक आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि औपन्यासिक प्रगति का एक आधार उस भाषा की समृद्धि भी है, ज्यो उसमें प्रयुक्त की जा रही होती है क्योंकि साहित्य और भाषा घनिष्ठ रूप में पारस्परिक संबंधता रखते है। भाषा क्षेत्रिय समृद्धि से साहित्यिक माध्यमों की उपलब्ध संभावनाओं में भी वृद्धि होती है।”[1]

4.1 भाषा का स्वरूप -

यदि हम भाषा के स्वरूप और आधार का अध्ययन करे तो हमें ज्ञात होगा कि भाषा के रूप में मनुष्य के मुख से जो ध्वनि निकलती है और जिसके द्वारा वह अपनी मनोभावनाओं को व्यक्त करता है उसके कतिपय निश्चित आधार होते हैं। अत: मानसिक और

SARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

भौतिक महत्त्वपूर्ण होता है । अत: सफल भाषा वही होती है जो उपन्यास की कथा, काल और पात्रों के अनुरूप हो । उपन्यास के पात्रों के मन में उठनेवाले अंतर्द्वंद्व को व्यक्त करने के लिए छोट-छोटे एवं स्वतंत्र वाक्यों का प्रयोग, सीधी यथार्थपरक भाषा के साथ-साथ व्यंग्यात्मक भाषा-महत्त्वपूर्ण होती है । परंतु इसमें प्रकृति के चित्रों का अभाव-सा परिलक्षित होता है । वास्तव में भाषा वह महत्त्वपूर्ण तत्व है जिसके माध्यम से किसी भी रचना में सार्थक अनुभवों की पहचान की जा सकती है । अत: अपनी सूक्ष्मता, पैनेपन एवं काव्यतमक व्यंजनाओं से ही उपन्यासों की भाषा आज अर्थवान हो सकती है ।

प्रस्तुत रचना 'बिस्रामपुर का संत' में लेखक शुक्ल जी ने व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग अधिक किया है तथा स्थान-स्थान पर काव्यात्मक एवं अलंकृत भाषा का प्रयोग करके अपनी भाषा संपन्नता का परिचय दिया है ।

भाषा के अंतर्गत निम्नलिखित रूपों का अध्ययन आवश्यक होता है -

4.2 शब्द-प्रयोग के विभिन्न रूप -

1. तत्सम शब्द ।
2. तद्भव शब्द ।
3. देशज शब्द ।
4. विदेशी शब्द ।
    1. अरबी शब्द ।
    2. फारसी शब्द ।
    3. विदेशी शब्द ।
5. अन्य शब्द ।
    1. ध्वन्यार्थक शब्द ।

2. निरर्थक शब्द ।
3. अपशब्द
4. नये रचित शब्द ।
5. दूविरूक्त शब्द ।

4.2.1 तत्सम शब्द -

श्रीलाल शुक्ल के 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में मानव जीवन की विविधता और व्यापकता मिलती है । पात्रों की स्थिति के अनुसार भाषा प्रयोग ही उपन्यासकार की विशेषता रही है । लेखक ने सहज स्वाभाविकता के साथ पात्रानुकूल तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है, जिसमें भावों की पूर्ण अभिव्यक्ति और बोधगम्यता मिलती है ।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त कुछ तत्सम शब्द निम्ननुसार -

'संस्कृति', 'संघर्ष', 'सर्वोदय', 'आकाश', 'स्वाभिमान', 'संसद', 'संकल्प', 'नैसर्गिक', 'आकाश', 'संस्कार', 'आकांक्षा', 'दुर्भाग्य', 'आत्मग्लानि', 'ईश्वर', 'समय', 'विश्वविद्यालय', 'राजनीति', 'संतान', 'धन्यवाद', 'आकाशवाणी', 'आत्मविश्वास' 'भविष्य', 'मन', 'मुक्ति', 'सहानुभूति', 'ईमानदारी', 'ग्लानि'[2]

भाषा को सहज प्रभावित करनेवाले उपर्युक्त शब्द हिंदी में घुलमिल गए हैं । लेखक ने इन शब्दों का प्रयोग बड़े सहज ढंग से किया है ।

4.2.2 तद्भव शब्द -

भाषा में स्वाभाविकता लाने के लिए तत्सम शब्दों के साथ-साथ तद्भव शब्दों का भी होना आवश्यक होता है । हिंदी में तद्भव की संख्या काफी मात्रा में दिखाई देती हैं । ऐसे शब्दों के परिणाम स्वरूप शुक्ल जी के 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास की भाषा जनजीवन की भाषा बन गई है ।

प्रस्तुत रचना में निम्ननुसार तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है -
'आँसू', 'कमर', 'कागज', 'कल्पना' ।[3]

4.2.3 देशज शब्द -

श्रीलाल शुक्ल जी का 'बिस्रामपुर का संत' यह उपन्यास ग्रामीण सामाजिक उपन्यास है अत: इसमें लेखक ने स्थान-स्थान पर देशज शब्दों का प्रयोग करके भाषा को प्रभावी बनाया है ।

जैसे,

'धोती', 'जंगल', 'कन्धें', 'शाम', 'जूता', 'पलंग', 'सपने', 'तलवार', 'पत्थर', 'पेड़', 'पागल', 'सनक' ।[4]

4.2.4 विदेशी शब्द -

हिंदी में उर्दू के शब्द घुलमिल गए हैं । उर्दू के शब्द अरबी-फारसी भाषा से आए हैं तथा अंग्रेजी के अनेक शब्दों का प्रयोग सभी भारतीय भाषाओं में हो रहा हैं । इन शब्दों के प्रयोग से लेखक ने अपनी रचना में स्वाभाविकता लायी है ।

4.2.4.1 अरबी शब्द -

'तकलीफ', 'सबूत', 'हैरान', 'हालत', 'अखबार', 'लिफाफा', 'शशि', 'रूमाल', 'बिल्कुल', 'तमाशा', 'खिलाफ', 'तसवीर', 'लायक', 'गलती', 'इत्मीनान', 'मौत', 'पर्दा', 'रोब', 'कागज', 'यकीन', 'तमीज', 'कागजात', 'रायफल', 'मजाक', 'हैरान'[5]

4.2.4.2 फारसी शब्द -

'मेज', 'बदकिस्मत', 'रूमाल', 'आवारा', 'बदमाश', 'गिरफ्तार', 'अफसोस', 'शादी', 'दीवार', 'बिस्तर', 'बरदास', 'बीमारी', 'पर्दा', 'गर्मी', 'खून', 'रोशनी', 'बेवकूफ', 'अफसोस', 'जिंदगी', 'इम्तिहान', 'खामोशी' ।[6]

4.2.4.3 अंग्रेजी शब्द -

लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग खुलकर किया है । पात्रों के यथार्थ जीवन को प्रकट करने के लिए अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है । अत: 'बिस्रामपुर का संत' का संत इस उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों की अधिकता दृष्टिगोचर होती है । अत: कहीं-कहीं पृष्ठ पर एक ही विधान में अनेक अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है ।

जैसे,

'टेलीफोन', 'स्लीपिंग सूट', 'बाथरूम', 'हेलिकॉप्टर', 'किलोमीटर', 'टायर', 'डिग्री', 'फाइल', 'टेबल', 'प्लेटफार्म', 'कॉटेज', 'ट्रेनिंग', 'गुड मॉर्निंग', 'टेबल लैंप', 'स्टेशन', 'शंटिग यार्ड', 'एडवोकेट', 'गुड नाइट', 'रिटायर', 'इंस्टीट्यूट', 'रिकॉर्ड', 'लौन', 'प्राईवेट', 'ड्राइव्हर', 'कमोड', 'पैक्टिस', 'मिनिस्टर', 'थर्मस', 'रिपोर्ट', 'हॉर्न', 'इंगेजमेंट', 'गाइड', 'लेक्चरर', 'गारंटी', 'पार्टी', 'स्टेज', 'इंटेलिजेंस', 'मनीऑर्डर', 'फार्म', 'प्रेझेंट सर', 'स्टैंडर्ड', 'प्लीज', 'नॉर्मन', 'इन्स्पेक्टर', 'कलेक्टर', 'टेनिस', 'लाइटनिंग', 'बेडरूम', 'टाइमटेबल', 'मोटर', 'फोटो', 'बॉर्डर', 'कॉफी', 'नो हार्ड फीलिंग्स', 'स्टूल', 'नौट', 'गुड', 'कैजुएलिटी', 'फिलॉसफी', 'पार्लर', 'हेडलाइट', 'टॉर्च', 'रिटायर', 'फूटबॉल', 'पोस्टमार्टम', 'ट्रस्ट', 'ट्रैजेडी' ।[7]

अंग्रेजी शब्दों के साथ कहीं-कहीं अंग्रेजी वाक्यों का भी प्रयोग लेखक ने किया हुआ दिखाई देता है।

जैसे -

i. क्यों ? मेरे कमरे का अनलिस्टेड़ नंबर तुम्हारे पास नहीं है ।[8]

ii. "भुलक्कड प्रोफेसरों का शानदार आऊटकिट !"[9]

iii. "तुम्हें टेलीफोन से एलर्जी है ?"[10]

iv. "बड़े भैया, आपके इस जंगली डेरे पर तो लगता है कि पूरा इंटेलिजेंस बुरो खुला है ।"[11]

v. "मैं समझ रही हूँ, विदेश से आफ काफी सेंटिमेंटल होकर लौटे हैं, मैं जा रही हूँ । आप नॉर्मल हो जाएँ, तब मिलेंगे ।"[12]

vi. " 'नो हार्ड फीलिंग्ज' कहकर भुलाया जा सकता है ।"[13]

इस तरह लेखक शुक्ल जी ने अंग्रेजी शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है और साथ ही अंग्रेजी मिश्रित हिंदी वाक्यों का ।

4.2.5 अन्य शब्द -

भाषा में सहज स्वाभाविकता और पात्रानुकूलता की दृष्टि से लेखक ने अन्य अनेक प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है ।

जैसे -

1. ध्वन्यार्थक शब्द ।
2. निरर्थक शब्द ।
3. अपशब्द ।
4. नये रचित शब्द ।
5. दूविरूक्त शब्द ।

4.2.5.1 ध्वन्यार्थक शब्द -

भाषा में सहजता लाने के लिए तथा वातावरण की यथार्थ स्थिति का चित्रण करने के लिए ध्वन्यार्थक शब्दों का प्रयोग किया हुआ मिलता है ।

जैसे -

रात की खामोशी में, ''खटर-खटर, खट्-खट्,''[14] (मालगाडियों की आवाज)

''धड्-धड्, खड्-खड्''[15] (गाडियों की आवाज)

''शू श्-श्-श्''[16] (ओठों की आवाज)

4.2.5.2 निरर्थक शब्द -

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में निम्ननुसार निरर्थक शब्दों का प्रयोग हुआ है - जैसे -

'उलटने-पलटने', 'नाते-रिश्तेवाले', 'झाड-झखांड', 'किडे मकौडे', 'टूट-फूट', 'काट-छाँट', 'टेढा-मेढा', 'उबड-खाबड,', 'इर्द-गिर्द', 'मैले-कुचैले', 'हृष्ट-पुष्ट', 'रेड्डी-फेड्डी' ।[17]

4.2.5.3 अपशब्द शब्द -

साहित्य में अपशब्द अवांछित होते हैं, किंतु कभी-कभी पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग में ऐसे शब्द आवश्यक भी होते है । विशिष्ट सामाजिक, राजनीतिक, परिस्थिति में कथावस्तु का आभास दिलाने के लिए, तो कहीं विषम परिस्थिति के प्रति आक्रोश प्रकट करने के लिए अपशब्दों का प्रयोग किया जाता है तथा पात्रों की विशिष्ट मनोवृत्ति को उजागर करने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है ।

उपन्यासकार शुक्ल जी ने भी कुछ अपशब्दों का प्रयोग किया है - जैसे -

'बेवकूफ', 'फिश्चुला', 'भोथरी', 'नालायक' आदि ।[18]

4.2.5.4 नए रचित शब्द -

हिंदी साहित्य में स्वातंत्र्योत्तर काल में नए-नए शब्दों का निर्माण करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है । अत: शुक्ल जी ने भी अपनी रचना में ऐसे शब्दों का प्रयोग नवीन अर्थ में किया है ।

जैसे -

"वे कड़े थे, साथ ही मुलायम भी ।"[19] (वक्ष के संदर्भ में)

"इस सबके बावजूद उनकी चेतना पर शंका और ड़र का शिलाखंड अचल होकर जमा रहा ।"[20] (डर के संदर्भ में)

"चुंबनों के सैलाब के बीच"[21] (चुंबन के संदर्भ में)

4.2.5.5 द्विरूक्त शब्द -

भाषा के सौंदर्य में अभिवृद्धि लाने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है । किंतु कई बार इन शब्दों की अतिशयता के कारण भाषा प्रवाह में बाधा भी पहुँच सकती है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक शुक्ल जी ने कहीं-कहीं ऐसे शब्दों का प्रयोग भाषा को सहज प्रवाहशील और स्वाभाविक बनाने के लिए किया हुआ दिखाई देता है । जैसे -

'धीरे-धीरे', 'कभी-कभी', 'आते-आते', 'बड़े-बड़े', 'गहरी-गहरी', 'चलते-चलते', 'किनारे-किनारे', 'दूर-दूर', 'बीच-बीच', 'कैसे-कैसे', 'सुनते-सुनते', 'उखड़ी-उखड़ी', 'टुकडे-टुकडे', 'पीछ-पीछे', 'ऊँचे-ऊँचे', 'कहते-कहते', 'छिपे-छिपे', 'बड़ी-बड़ी', आदि ।[22]

4.2.6 मुहावरें -

उपन्यास हो नाटक हो या कहानी हो भाषा को सजीव और प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक शुक्ल जी ने निम्न मुहावरों का प्रयोग किया है ।

i. ‘‘व्यय होना’’[23]

ii. ‘‘आँखे मूँदना’’[24]

iii. ‘‘गहरी साँस छोड़ना’’[25]

iv. ‘‘दम तोड़ना’’[26]

v. ‘‘गला घोटना’’[27]

vi. ‘‘साँस रोककर पड़े रहना’’[28]

vii. ‘‘तीखी निगाह से देखना’’[29]

viii. ‘‘उब जाना’’[30]

ix. ‘‘टाँग खींचना’’[31]

x. ‘‘आत्मसमर्पण करना’’

इस तरह लेखक ने मुहावरों का प्रयोग करके भाषा को प्रभावशाली बनाया है ।

शुक्ल जी ने हिंदी मुहावरों के साथ कुछ अंग्रेजी मुहावरों का भी प्रयोग किया है । जैसे -

‘‘फ्लागिंग ए डेड हॉर्स’’[33]

4.2.7 पद्य की पंक्तियाँ -

लेखक शुक्ल जी ने ‘बिस्रामपुर का संत’ उपन्यास में पद्य की पंक्तियों का भी प्रसंग के अनुसार प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है ।

जैसे -

‘‘द वुडस् आर लवली, डार्क एंड डीप !. . . .

एंड माइल्स टु गो बिफोर आई स्लीप ।’’[34]

तथा,

"सबै भूमि गोपाल की ।"[35]

4.3 शैली -

वर्तमान हिंदी उपन्यास में इस तत्व को विशिष्ट महत्त्व प्रदान किया जाता है । किसी बात के कहने या लिखने के विशेष ढंग या तरीके को शैली कहा जाता है । आधुनिक युग की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी विधि शैली हैं, जो प्राचीन वस्तु को नवीन परिवेश में प्रस्तुत कर सकती है । शैली का संबंध केवल रचना से ही नहीं अपितु रचनाकार से भी होता है । अत: रचनाकार का परिवेश, अनुभव, संस्कार, रूचि आदि का भी उसमें विशेष महत्त्व होता है । इससे स्पष्ट होता है कि शैली एक कलात्मक उपलब्धि है, जो प्रतिभा की तरह अनायास प्राप्त नहीं होती ।

हिंदी साहित्य के प्रारंभिक उपन्यासों में वर्णनात्मक शैली सर्वाधिक प्रचलित रही है किंतु प्रेमचंदोत्तर युग में परिवर्तित विषय-वस्तु के अनुसार नई-नई शैलीयों का प्रयोग प्रारंभ हुआ है । आज उपन्यास के क्षेत्र में अनेक शैलियाँ प्रचलित रही हैं ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में निम्न शैलियों का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है ।

1. वर्णनात्मक शैली ।
2. व्यंग्यात्मक शैली ।
3. आत्मकथनात्मक शैली ।
4. पत्रात्मक शैली ।
5. स्वप्नविश्लेषणात्मक शैली ।
6. नाटकीय शैली ।
7. फ्लॅश-बॅक शैली ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

8. दृश्य शैली ।

4.3.1 वर्णनात्मक शैली -

उपन्यास लेखन में जो शैली सबसे अधिक प्रचलित है वह सामान्यत: वर्णनात्मक शैली है । वर्णनात्मक शैली परंपरागत शैली है । इसमें विचारों एवं घटनाओं का वर्णन होता है । इस पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें उपन्यास का कार्य अपेक्षाकृत सुविधाजनक हो जाता है और कथा की वर्णनात्मक संभावनाएँ भी अधिक रहती हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास में कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह के बिस्रामपुर जाने के बाद उन्हें जो वातावरण दिखाई देता है उसका वर्णन देखिए - ''मंत्री जी बैठे हुए थे । लगता था, उनके लिए विश्व में पतंगों मच्छरों, बिच्छुओं आदि का अस्तित्व नहीं है । उस बू का भी अस्तित्व नहीं है, जो पिछवाड़े बाग के एक दूरवर्ती कोने में सड़ती हुई गोबर की खाद से आ रही है । उससे बचने के लिए अगर खिड़की बंद कर दी जाती तो उस उमस और गर्मी का भी उनके लिए अस्तित्व न होता जो इस समय कमरें में किसी ठोस पदार्थ-सी-समायी हुई है ।''[36] वर्णनात्मक शैली का यह सुंदर नमुना लगता है । अत: आश्रम के कमरों का वर्णन भी वर्णनात्मक शैली का ऊँचा नमुना बन बैठा है । जैसे,

''कमरे की खिड़कियों और दरवाजों पर जाली नहीं है ! मच्छर पूरी आजादी के साथ उनके बाहर उड़ रहे हैं और अंदर भी ! जली-कटी पथरीली धरती पर बारिश के बाद बिच्छुओं को भी निकलना चाहिए, वे दीवार के कोनों और दरवाजे खिड़कियों की चौखट पर अधमरे से लेटे होंगे, पर किसी के स्पर्श का आभास पाते ही उनका डंक कितनी जल्दी तन जाएगा हम सभी जानते है ।''[37]

इस प्रकार रावसाहब के चरित्र का वर्णन भी बिलकुल सजीव लगता है - ''जबरदस्त सुझ-बूझ, हास-परिहास की अकुंठित प्रवृत्ति, खुला व्यवहार, प्रखर व्यवहार बुद्धि,

कुछ आदर्शों के प्रति कड़ी निष्ठा-इन सारी पारदर्शी विशेषताओं के साथ भी उनके व्यक्तित्व में ऐसा बहुत कुछ बचा था जिसमें औरों का झाँक पाना मुश्किल था ।''[38]

इस प्रकार अनेक उदाहरण 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में दिखाई देते हैं । इस शैली का प्रयोग, सप्रयोजन, व्यंजनात्मक हो तो इसकी सार्थकता बढ़ जाती है । प्रस्तुत उपन्यास में कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह के मन की उथल-पुथल का संकेत देने के विशिष्ट उद्‌देश्य से या उनकी अस्वस्थता व्यक्त करने के उद्‌देश्य से अनेक स्थलों पर लेखक ने बाह्य वातावरण का भी सफलता से चित्रण किया है ।

4.3.2 व्यंग्यात्मक शैली -

यह शैली सबसे अधिक प्रभावी है । इसमें उपन्यासकार व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर, समाज में स्थित अव्यवस्था पर लेखक अपनी व्यंग्यात्मक शैली के सहारे प्रहार करता है । अत: ऐसी व्यवस्थाओं पर लेखक व्यंग्यात्मक शैली के आधार पर टिका-टिप्पणी करता है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक शुक्ल जी अधिकतर व्यंग्यात्मक शैली का ही प्रयोग किया है और सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य किया है ।

जैसे,

''राजभवन के दीवानखाने में राज्य के मुख्यमंत्री महामहिम से मिलने का इंतजार कर रहे थे, खुद महामहिम अपने शयनकक्ष में एक सपना देख रहे थे । यह हलके बुखार में हलके नाश्ते के बाद की नींद का सपना था ।''[39] अत: उपर्युक्त व्यंग्यात्मक विवरण से ही उपन्यास की शुरुआत हुई है ।

लेखक शुक्ल जी ने राजनीतिक नेता लोग स्वयं को केंद्र में रखकर ही सोचते है तथा जनता की सेवा करने का नाटक, ढोंग करते हैं और उनकी खिल्ली कुँवर साहब के माध्यम से मुडाई है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास के केंद्रिय पात्र कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह राज्यपाल हैं जो करीबन अस्सी साल के हैं, अत: वे इतने बूढ़े होकर भी खुद को एक रोमांटिक युवक की तरह मानते हैं - "एक मुलायम मखमली कंबल से वे अपनी छाती ढके हुए थे । बजर का बजना बंद हो चुका था । उन्होंने सिर उठाकर सामने देखा । यहाँ दीवार से सटे आदमकद शीशे में उन्हें एक शक्ल दिखी । उन्होंने उसे खारिज करना चाहा पर मानना पड़ा कि वह उन्हीं की है ।"[40]

इसी प्रकार 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह और दोनों में व्यंग्यात्मक शैली का संवाद प्रभावी ढंग से दिखाई देता है ।

विवेक मुस्कराकर बोला, "भूदान कार्यकर्ताओं को प्रतिष्ठान से अलग करके देखना जरा मुश्किल काम है । है न ?"[41]

इस पर कुँवर साहब की प्रतिक्रिया भी इतनी गहरी है कि व्यंग्यात्मक शैली का सुंदर नमूना लगती है -

"जिसके मार्गदर्शक श्रीमान विवेक हो, उसका इस थीसिस पर अचंभा नहीं होना चाहिए ।"[42]

इस तरह मुख्यमंत्री कुँवर साहब को मिलने आते हैं और नाराज होकर चलने लगते है, अत: जाते वक्त उन्होंने जो प्रतिक्रिया की है वह लेखक ने राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य किया है - "बजट अधिवेशन में कुछ ही दिन रह गए है । संयुक्त विधान मंडल को संबोधित करते समय महामहिम को बिल्कुल स्वस्थ होना चाहिए । सड़े टमाटर और अंडों का

डर नहीं है पर विपस्त के पास कागजों का पुलिंदा भी काफी वजनी होगा । आप समझ रहे हैं न ?"[43]

स्वार्थी राजनीतिक नेताओं की पोल खोलने का काम लेखक ने व्यंग्यात्मक शैली के द्वारा किया है - "इस मौके पर जो नए सूठ सिलाए गए, उनमें से एक को अभ्यास के लिए अपने जिस्म पर सजाये हुए वे एक दिन अचानक इस कस्बे में विवेक की कॉटिज पर आ पहुँचे । 1953 के हिंदुस्तान में उनका ब्यूक पर चलना अनहोना नहीं था, फिर भी ब्यूक ब्यूक थी, सस्ती कूलीटमास्टर शेवरले नहीं ।"[44]

इसी प्रकार लेखक ने 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है ।

हिंदी उपन्यासों में दिन-ब-दिन परिवर्तन हो रहे हैं । वैसे तो उपन्यासों में व्यंग्यात्मकता की दृष्टि से भी परिवर्तन आने लगा है । आधुनिक युग में इस शैली की लोकप्रियता के कारण व्यंग्यात्मक उपन्यासों की रचनाएँ हो रही हैं । जीवन के विविध पहलुओं की यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए व्यंग्य एक प्रभावशाली माध्यम है ।

अत: शुक्ल जी व्यवस्था की विषमताओं से कभी सहमत नहीं होते । उनके प्रति आक्रोश प्रकट होना स्वाभाविक है ।

अत: ऐसी व्यवस्था पर उन्होंने तीखा व्यंग्य किया है और इसी कारण उनकी भाषा में व्यंग्यात्मकता अधिक दिखाई देती है ।

4.3.3 आत्मकथनात्मक शैली -

जिस उपन्यासों में प्रथम पुरुष में कथा प्रस्तुत की जाती है वे आत्मकथनात्मक शैली प्रधान उपन्यास माने जाते हैं ।

आत्मकथनात्मक शैली के बारे में सरोजनी त्रिपाठी का मत - ''अधिकतर प्रथम पुरुष में वर्णित उपन्यास ही इस कोटि में आते हैं । इस शैली में उपन्यास के मुख्यपात्र के अंतर्जीवन को बड़ी ही स्पष्टता और प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है क्योंकि कथाकार और मुख्यपात्र में सारूप्य स्थापित हो जाता है ।''[45] लेखक की नीजी अनुभवों की अभिव्यक्ति के लिए इस शैली में अधिक अवसर रहता है । प्रस्तुत शैली में घटनाओं की अपेक्षा को अधिक महत्त्व दिया जाता है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में आत्मकथनात्मक शैली का प्रयोग काफी मात्रा में दिखाई देता है । अत: आत्मकधनात्मक शैली के बारे में जगन्नाथ प्रसाद शर्मा का मत देखना उचित होगा । उनके मतानुसार - ''इस शैली में बात इस ढंग से की जाती है ~~की जाती है~~ कि जैसे कोई अपना परिचय दे रहा हो अथवा अपने जीवन से संबंध घटनाएँ और स्मृतियाँ स्वयं किसी से कह रहा हो ।''[46]

कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह को शुभकामनाओं की चिठ्ठियाँ आयी है, कुँवर साहब उन चिठ्ठियों को पढ़कर स्वयं ही आत्मकथन करते हैं तथा अपने को परखने की चेष्ठा करते हैं - ''सुख सुविधाओं में पला, विलायत से बैरिस्टर बनकर आया हुआ एक रईस । समाजवादी परंपरावाले एक संपन्न पर तपस्वी परिवार का लाड़ला । हाई कोर्ट का सफल एडवोकेट ।''[47] अत: कुँवर साहब सोचते हैं कि सचमुच मैं इस शुभकामनाओं के लायक हूँ या नहीं । अत: कुँवर साहब अपने बारे में जो कथन करते हैं, इसे आत्मकथनात्मक शैली के अंतर्गत रखा जाता है ।

आत्मकथनात्मक शैली का और एक सुंदर नमूना 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में दिखाई देता है - ''उन्हें लगा कि इसी तरह अगर वे अपने को ढील दिए रहे तो उन्हें किसी मनश्चिकित्सक के पास जाना पड़ेगा । सुंदर को इस तरह से छूने के कई खतरनाक परिणाम हो

सकते हैं । बदनामी राजनीतिक भविष्य का ध्वंस ! और, आप जेल जा सकते हैं बैरिस्टर साहब !''[48] कुँवर साहब सुंदरी को चाहने लगे थे और उसका साथ या प्रेम प्राप्त करना चाहते है तथा उसे छूने की नाहक चेष्टा करते हैं लेकिन कुछ देर बाद वे स्वयं उसी पर सोचते हैं और अपने-आप से ही बात करते हैं ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह स्वयं को समझाते हैं - ''तुम्हें यह सब सोचने की जरूरत नहीं है । अपने अहम् को लेकर तुम्हें कुछ भी सोचने की जरूरत नहीं है । तुम बुढ़े हो गए हो । तुम्हारी जिंदगी का कोई भरोसा नहीं है ! तुम्हारी अंतिम यात्रा किसी भी समय हो सकती है । तुम्हारी सुरक्षा-जाँच हो चुकी है । डिपार्चर लाउंज में बैठे हुए तुम अब अपनी अंतिम उड़ान की प्रतीक्षा कर रहे हो । किसी भी समय माइक्रोफोन पर घोषणा हो सकती है कि तुम्हारा हवाई जहाज उड़ान के लिए तैयार है ।''[49] अत: यह उदाहरण आत्मकथानात्मक शैली का सुंदर नमुना बन बैठा है ।

कुँवर साहब इस बात से हैरान हो जाते हैं कि मैंने अनजाने में सुंदरी और विवेक की जिंदगी को समाप्त कर दिया है - यह मैंने क्या किया ? इस बात से वे पश्चाताप की आग में जलने लगते हैं ।

अत: इस शैली के द्वारा पात्रों के विचार भाव तथा प्रत्यक्ष अनुभव भी उपलब्ध होते हैं ।

इस प्रकार 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में आत्मकथनात्मक शैली का प्रयोग किया है ।

4.3.4 पत्रात्मक शैली -

पत्रात्मक शैली में लिखे गए उपन्यासों की कथावस्तु का विकास अपने आत्मीय जनों को लिखे गए पत्रों के माध्यम से होता है ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR
KHARDEKAR LIBRARY

पत्रात्मक शैली के बारे में डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र लिखते हैं कि ''पत्रों के माध्यम से औपन्यासिक पात्रों के भावाभिव्यक्ति में यह सुविधा रहती है कि वे उन बातों को भी सहज रूप से प्रकट कर देते हैं, जिन्हे प्रत्यक्ष रूप में कहने में उन्हें संकोच होता है ।''[50] इस प्रकार पात्र के हृदय में होनेवाली हलचल तथा पात्रों के मन की गुढतम बातों को सुगमता से व्यक्त करने में यह शैली विशेष रूप से उपयोगी होती है । अत: पत्र में किसी प्रकार का दूराव-छिपाव नहीं रहता । नि:संकोच रूप से मनोभाव प्रकट किए जाते है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में सुंदरी दूवारा सुशीला को लिखा पत्र-पत्रात्मक शैली के अंतर्गत ही आता है - ''तू इसे भाग्य की बिड़ंबना कहती है, पर कुँवर साहब का व्यवहार मेरे लिए दैवी कृपा सिद्ध हुआ है । उसने कुँवर साहब को कुछ क्षणों के लिए खलनायक बनाकर मुझे अपने मानसिक उहापोह से छुटकारा दिला दिया है । इसीलिए मेरे मन में कुँवर साहब के लिए क्रोध या घृणा नहीं है । उन्हीं के कारण मैं कह सकी थी कि विवेक, मुझे विवाहित जीवन के सपनों में न भटकाओं, मैंने अपने लिए जो रास्ता चुना है, उसी पर मुझे जीवन भर चलना है ।''[51]

कुँवर साहब पश्चाताप की आग में जलने लगते हैं और आत्महत्या का पर्याय निकालते है । अत: आत्महत्या करने पहले - कुँवर साहब विवेक के नाम एक पत्र छोड़ देते हैं । अत: यह पत्र भी पत्रात्मक शैली अंतर्गत ही आता है । अत: इसी पत्र का एक संदेश जो विवेक के लिए है वह निम्ननुसार -

''मेरे अंत को लोग एक दुर्घटना भर समझेंगे । इसका प्रतिवाद मत करना । मैं एक आत्महत्या के रूप में तुम्हें सामाजिक असमंजस का शिकार नहीं बनाना चाहता । साथ ही तुम्हें धोखे में रखकर अपने अंतिम कृत्य में तुम्हारे मिथ्याचारी भी नहीं बनाना चाहता । इसलिए यह पत्र सिर्फ तुम्हारे लिए लिख रहा हूँ , दूसरों की जानकारी के लिए नहीं ।''[52]

इसलिए कुँवर साहब आत्महत्या करने से पहले विवेक को पत्र के द्वारा जानकारी देते है । अत: धीरज सिंह का प्रबंध भी विवेक को करना है यह भी वे उसी पत्र में ही लिखते है । अत: यह पत्र व्यक्तिगत तौर पर क्यों न हो परंतु पत्रात्मक शैली के अंतर्गत ही आता है ।

इसी तरह कुँवर साहब के द्वारा बड़े अफसरों को लिखे गए पत्र भी पत्रात्मक शैली के अंतर्गत ही आते है ।

इस प्रकार शुक्ल जी ने 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास पत्रात्मक शैली का उपयोग परिस्थितियों की आवश्यकता नुसार प्रभावी ढंग से सफलतापूर्वक किया हुआ दिखाई देता है ।

4.3.5 स्वप्न विश्लेषणात्मक शैली -

इस शैली का उपयोग अधिक मात्रा में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में ही होता है । इसमें पात्रों की अंतरिक भावनाओं, अतृप्त इच्छाओं एवं कुंठाओं को स्वप्नों के माद्यम से उजागर किया जाता है ।

'बिस्रामपुर का संत' इस उपन्यास में लेखक शुक्ल जी ने इस शैली का उपयोग सफलतापूर्वक किया है ।

प्रस्तुत रचना में कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह महत्त्वकांक्षी, अतृप्त तथा कुँठा से ग्रस्त इस रूप में चित्रित हुए है, अत: उन्हें कभी चैन की नींद नहीं मिलती । कुँवर साहब जयंती से प्रेम करने लगते है, यह सिलसिला कुछ महिने चलता रहा और कुछ महिने बाद जयश्री पति के साथ विदेश चली गई और किसी कारण वहाँ उसकी मौत हो गई ।

कुँवर साहब मात्र जयश्री को जीवन के अंतिम दिनों तक नहीं भूल सके, अत: उसके सपने देखते रहते और दिल को सुकून देने की चेष्टा करते है ।

जैसे,

''सपने में वह यकीन अस्सी साल के नहीं थे । उम्र के बारे में कुछ भी तय नहीं था; पर शायद वे पचीस-छब्बीस साल पहलेवाले कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह थे ।''[53]

कुँवर साहब बूढ़े हो चुके हैं वे अत: राज्यपाल हैं और वे जयश्री के बाहों में, सपने अपने को अटका हुआ देखते हैं ।

कुँवर साहब हमेशा वासना से अतृप्त रहें हैं और यही तृप्ति वे सपने के माध्यम से पूरी करते हैं - ''बहुत साल हुए उन्होंने सुंदरी के स्तनों को एक बार-सिर्फ छुआ था । वे कड़े थे, साथ ही मुलायम भी । पर आज उन्हें सिर्फ कड़ेपन का एहसास हुआ, उन्हें लगा कि उनको सुनहरे शिलाखंड़ों से काटकर बनाया गया है । यही से वह सपना एक जकड़न-भरे कुस्वप्न में बदलने लगा ।''[54]

इस प्रकार लेखक शुक्ल जी ने कुँवर साहब के मन में स्थित भावनाओं को इस शैली के द्वारा चित्रित किया है ।

उपर्युक्त उदाहरणों के साथ कुँवर साहब के सपने का और एक नमूना काफी सुंदर रूप से लेखक ने प्रस्तुत किया है - ''वे मन ही मन अपना मजाक उड़ाते, फिर भी कभी-न-कभी बेतवा के दूसरी ओर घिरता हुआ शाम का धुँधलका या विनय वाटिका की रहस्यमय हरियाली जयश्रीवाले दिवास्वप्नों को उत्तेजित कर सकती थी ।''[55]

इस प्रकार लेखक ने 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में स्वप्न विश्लेषण शैली का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है और इसमें लेखक को सफलता मिली है ।

4.3.6 नाटकीय शैली -

नाटकों जैसा प्रभाव एवं गति की तीव्रता लाने के लिए उपन्यासकार इस शैली का प्रयोग करते हैं । नाटकीय शैली के बारे में दुर्गाशंकर मिश्र कहते हैं, ''इसमें उपन्यासकार पात्रों के भावनात्मक वार्तालाप के साथ-साथ अपनी उपयुक्त टिप्पणियों और पात्रों के अनुभव चित्रण

तथा कहीं-कहीं उनके अधूरे वाक्यों के माध्यम से एक अन्य वातावरण का निर्माण करते हुए उनकी आंतरिक भावनाओं की सफल अभिव्यंजना का उद्घाटन करता है ।''[56]

इस शैली में पात्रों को अपने कार्यों और कथनों द्वारा कथा को आगे बढ़ाने का अवसर मिलता है । इस शैली का एक अच्छा उदाहरण कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह है, उनकी हरकते में नाटकीयता के दर्शन होते हैं ।

कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह आचार्य विनोबा के साथ दिलचस्पी से नहीं रहते अत: साथ रहने का केवल नाटक मात्र करते है - ''आचार्य विनोबा भावे का दिन में साथ, ग्रामदान से जुड़ी हुई नाटकीयता और उल्लास-यहीं उन्हें जगाये रखने के लिए काफी होता । पर उनकी चेतना को बराबर कुदेरता, उकसाता हुआ वहाँ अब सुंदरी का चेहरा भी था ।''[57]

कुँवर साहब सुंदरी को देखने के लिए तरस रहे थे और कुछ बहाना बनाकर वे निर्मल से कहते हैं, ''मैं सोने जा रहा था, पर सोचा कि एक बार फिर देख लिया जाए कि वहाँ सब ठिक-ठाक है या नहीं - पर यहाँ तो इन मच्छरों की भरमार है । इसका क्या किया जाए ?''[58] कुँवर साहब को प्रतिक्रिया स्वरूप निर्मल भाई बताते है कि यहाँ सब ठिक है पर स्वयं शर्मिंदा होकर कुँवर साहब कहते है - ''मुझे मच्छरों का ख्याल न रहा, मैनेंजर को सोचना चाहिए था । कम-से-कम देवियों के लिए कोठी के ही दो कमरे खुलवा देता । वहाँ जाली के दरवाजे हैं । आराम से सो सकती थी । सुंदरी बेन कहाँ है ।''[59] सुशीला बेन निर्मल भाई से कहती है कि सचमुच यहाँ मच्छर बहुत हैं और आराम से सोने ही नहीं देते तथा सुशीला बेन सुंदरी से पूछती है कि, ''चलोगी कुँवर साहब के हरम में ?''[60] यह सुनकर कुँवर साहब शर्मिंदा हुए और नाटकीयता से कहने लगे, ''नैं सिर्फ इधर के हालचाल लेने आया था सुशीला जी । आपसे हरमों की कहानियाँ फिर कभी सूनी जाएँगी । अभी विश्राम करें ।''[61] इससे स्पष्ट होता है कि कुँवर साहब कितने नाटकीय व्यवहार करते हैं।

CITY ... KOLHAPUR

कि जयश्री के लिए अपनी असंभव आसक्ति वे सुंदरी पर आरोपित करने लगे थे ? क्या अपनी लंपटता को गरिमा-मंडित करने, उसे औचित्य देने का यह बहाना भर नीर था ?''[63] तथा - ''शताब्दियों पहले उन्होंने जयश्री नाम की . . . . क्या? महिला ? लड़की ? . . . किसी जयश्री के नाम एक अधकचरी कविता लिखकर भेजी थी और जवाब में उन्हें मिला था सिर्फ 'क्या ? क्यों' पर यह जवाब भी उनको कल्पनाओं के इंद्रधनुष पर बैठाकर आशा और उल्लास के अनंत क्षितिज में सारी रात भटकाता रहा था । अब इतने वर्षों बाद ये चिट्ठियाँ और अखबार पढ़कर उन्हें कुछ वैसे ही उल्लास की उष्मा ने छुआ ।''[64]

इस प्रकार लेखक श्रीलाल शुक्ल जी ने 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में फ्लॅश बैक या पूर्व दीप्ति शैली में प्रासंगिक रीति से उठते-लुप्त होते विचारों की अभिव्यक्ति के लिए शिल्प का बदन स्वीकृत नहीं किया है । ऐसे प्रसंगों पर उनकी भाषा बोलचाल की भाषा से भिन्न हो जाती है । साधारण वाक्य-विधान से काम नहीं चलता नए शब्दों का निर्माण करना पड़ता है । फिर भी पात्रों के मन की गूढ़ भावनाओं को सूक्ष्म धरातल पर चित्रित करने के लिए इस शैली का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है ।

4.3.8 दृश्य शैली -

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक शुक्ल जी ने दृश्य शैली का भी प्रयोग कुशलतापूर्वक तथा प्रसंगानुसार किया है । प्रो. सतीश पांडेय के अनुसार ''इस शैली में छोटे-छोटे दृश्यों के माध्यम से वातावरण और पृष्टभूमि के साथ-साथ पात्रों के रूपाकृति एवं कार्यों का सजीव चित्र खिंचा जाता है ।''[65]

अत: इस शैली द्वारा लेखक विराट दृश्यों का चित्रण शब्दों के माध्यम से, संक्षेप में प्रस्तुत करता है । पात्रों के कार्य, घटनाएँ तथा जीवन के दृश्य इस प्रकार प्रस्तुत किए जाते हैं कि पाठक इन प्रसंगों के साथ तादात्म्य प्राप्त करते हैं ।

अत: 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक शुक्ल जी ने कुँवर साहब के दूवारा नाटकीय शैली का बड़ी सफलतापूर्वक प्रयोग किया है ।

4.3.7 फ्लैश बॅक या पूर्वदीप्ति शैली -

फ्लैश बॅक या पूर्वदीप्ति शैली में जीवन की घटनाओं का वर्णन स्मृति-तरंगों के रूप में होता है । अत: वर्तमान की घटना या स्थिति-विशेष से संबंध घटनाएँ ही इस शैली में ली जाती है, जिसका संबंध पात्र के अतीत से जुड़ा होता है । किंतु तात्कालिकता का भावबोध कराने के लिए फ्लॅश बैक शैली का उपयोग किया जाता है । जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षण में स्मृति तरंगों के माध्यम से अतीत की घटनाओं के अंधकार को लिपिबद्ध करके दीप्त किया जाता है । अतीत के स्मृत्यावलोकन से वर्तमान स्थिति के विवेचन का अवकाश मिल जाता है ।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने फ्लॅश बैक शैली का सुंदरता से समायोजन किया है, जैसे -

''पता नहीं संगमरमर की इस बेंच पर वह भी शाम की खामोशी में कभी बैठी थी या नहीं, पर वहाँ बैठने के कुछ क्षणों बाद उन्हें सुंदर की वास्तविकता का आभास हुआ । उन्हें लगा कि वह वहीं है, किसी भी समय उनके सामने आकर खड़ी हो सकती है, उसी परिहास की नजर से कह सकती है; मैं सुंदरी हूँ ।''[62]

इससे स्पष्ट होता है कि फ्लैश बॅक शैली का यह कितना सुंदर नमूना लगता है और उतने ही कुशलतापूर्वक लेखक वे प्रस्तुत किया है और कई ऐसे प्रसंग हैं जो फ्लॅश बैक शैली के अंतर्गत आते हैं ।

जैसे,

''अब उन्हें लगा कि इस माया महल की नींव फर्जी थी । आँखों की भंगिमा और नाक नुकीलेपन की समानता को छोड़कर वे एक दुसरे से बिलकुल अलग थीं । फिर भी ऐसा क्यों था

शुक्ल जी ने 'बिस्रामपुर का संत' इस उपन्यास में दृश्य शैली का प्रयोग कुशलतापूर्वक और सुंदर ढंग से किया है ।

कथ्य को प्रकट करनेवाले ऐसे दृश्यों के साथ ही पात्र के व्यक्तित्व को चित्रात्मक अभिव्यक्ति देने में भी शुक्ल जी को सफलता मिली है ।

जैसे -

"और मैं सुंदरी हूँ ।"[66]

"सुंदरी ? वह तो आप हैं ही; पर आपका नाम क्या है ।"[67]

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में रावसाहब इस पात्र के व्यक्तित्व को भी सुंदरता से चित्रात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है ।

जैसे,

"राव साहब हँसने लगे, बोले, 'तब छोडो ।' फिर रुककर, देखो न जयंती, दिल्ली के नेता भी कैसा कमाल करते हैं ! उधर अखबारों में मेरी तारीफ में ऐसी-ऐसी खबरें छाप रहे हैं और इधर तुम्हें मेरे पास चुनाव-समझौता करने के लिए भेजा है ।"[68] अत: रावसाहब के बोलने का ढंग हर शब्द को मजाक में हँसर बोलते हैं, यह प्रसंग लेखक ने दृश्य शैली के मादृयम से प्रस्तुत किया है ।

लेखक शुक्ल जी ने प्रकृति के भी सुंदर चित्र प्रस्तुत उपन्यास में दृश्य शैली के दृवारा अंकित किए हैं ।

"पपीहा अब भी बोल रहा था; उनके पीछवाले पेड़ की कड़ी डाल पर कठफोडते की 'ठक्-ठक्' हो रही थी । हवा की आवाज और छुबन दोनों में रेशमी ससरराहट थी ।"[69] तथा - "रास्ते के किनारे-कीनारे, जहाँ बंजर धरती के कुछ छोटे बच गये थे पेडों के कटे हुए तनों और कुंदों की सतह को चिकना करके जमीन में गड़ा रहने दिया गया ।"[70]

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
KOLHAPUR

इस तरह लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में दृश्य शैली का प्रयोग किया हुआ देखने को मिलता है ।

समन्वित निष्कर्ष -

इस प्रकार हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल का भाषा पर अधिकार एवं उनकी भाषा सशक्त है । उन्होंने जहाँ और जैसा चाहा वैसे ही भाषा को गढ़ा, सँवारा है और रूप दिया है ।

पात्रों की मानसिकता, टूटन और बिखराव के अनुसार अलग-अलग वाक्यों का प्रयोग किया है । इसी कारण कहीं-कहीं उनके वाक्य क्रियाविहीन भी होते हैं, तो कहीं-कहीं छोटे-छोटे वाक्य प्रश्नार्थक रहते हैं कहीं अंग्रेजी मिश्रित शब्दावली से युक्त वाक्य जो पात्रों की मनोवृत्ति का सूक्ष्मता से चित्रण करनेवाले हैं । प्रसंग के अनुसार भिन्न-भिन्न शब्दावली का प्रयोग करके शुक्ल जी ने संवादों में पैनापन और गहनता लायी है ।

शुक्ल जी ने 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में परिस्थिति के अनुसार भिन्न शब्दावली का प्रयोग किया है । साथ ही विदेशी भाषा के अंतर्गत अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग किया है और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग तो खुलकर किया है । मुहावरों का प्रयोग करके देशज शब्दों का भी प्रचुर मात्रा में उपयोग किया है और भाषा को सहज-प्रभावी बनाया है ।

भाषा के साथ-साथ शुक्ल जी ने प्रस्तुत रचना में प्रसंग या परिस्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार की शैलीयों का भी प्रयोग किया है जैसे, वर्णनात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, स्वप्नविश्लेषनात्मक शैली, नाटकीय शैली, फ्लॅश बॅक शैली तथा दृश्य शैली का प्रयोग करके भाषा को सुगमता से प्रवाहित बनाया है । अत: प्रस्तुत रचना में लेखक ने अधिक तर फ्लॅश बॅक शैली, आत्मकथनात्मक शैली और व्यंग्यात्मक शैली का ही प्रयोग किया है ।

अत: 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक ने दृश्य शैली का प्रयोग करके वातावरण तथा प्रकृति चित्रण का हुबहु वर्णन किया है ।

अत: 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास की भाषा शैली पात्रानुकूल लगती है । पात्र जिस स्थिति में संचार करते हैं, जिस संस्कार में पलते हैं, उसी के मुताबिक उनकी भाषा भी होती है । इस उपन्यास में नए-नए शब्दों का, अपशब्दों का, अंग्रेजी मिश्रित वाक्यों का भी अच्छा गठन देखने को मिलता है । अत: मुहावरों ने भाषा की गरिमा को बढ़ाया है ।

इससे स्पष्ट होता है कि भाषा-शैली का सुंदर समालोचन 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में हुआ है और लेखक को भी सफलता मिली है ।

संदर्भ-सूची

अ.नं.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्रमांक
1.	प्रतापनारायण टंडन ,	हिंदी उपन्यास कला	पृ. 234
2.	श्रीलाल शुक्ल,	'बिस्रामपुर का संत'	पृ. 16, 20, 20, 54, 21, 164, 47, 45, 20, 50, 72, 161, 187, 61, 51, 42, 36, 126, 76 188, 19, 18, 90, 110, 204, 148, 119.
3.	वही,	वही,	पृ. 60, 67, 65, 63
4.	वही,	वही,	पृ. 21, 33, 24, 25, 30, 33, 34, 35, 36, 37, 50, 70.
5.	वही,	वही,	पृ. 73, 128, 80, 82, 16, 24, 94, 94, 80, 118, 102, 104, 86, 89, 150, 50, 61, 15, 120, 78, 102, 47, 47, 31, 37, 96, 96, 134, 180.
6.	वही,	वही,	पृ. 15, 28, 94, 142, 128, 128, 71, 90, 185, 180, 15, 15, 10, 80, 128, 78, 09, 71, 18, 138.
7.	वही,	वही,	पृ. 8, 8, 8, 20, 20, 34, 44, 37, 17, 37, 44, 34, 09, 55, 57, 58, 61, 63, 65, 73, 174, 77, 79, 82, 83, 84, 87, 88, 91, 96, 09, 20, 44, 34, 102, 104, 105, 108, 113, 115, 119, 120, 122, 123, 125, 126, 128, 129, 130, 131, 132, 155, 156, 157, 167, 173, 179, 180, 182, 190, 194, 120, 204.

अ.नं.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्रमांक
8.	श्रीलाल शुक्ल,	'बिस्रामपुर का संत'	पृ. 43
9.	वही,	वही,	पृ. 43
10.	वही,	वही,	पृ. 49
11.	वही,	वही,	पृ. 105-106
12.	वही,	वही,	पृ. 120
13.	वही,	वही,	पृ. 157
14.	वही,	वही,	पृ. 57
15.	वही,	वही,	पृ. 58
16.	वही,	वही,	पृ. 95
17.	वही,	वही,	पृ. 21, 23, 24, 25, 30, 33, 34, 35, 36, 37, 50, 79.
18.	वही,	वही,	पृ. 09, 13, 79, 102.
19.	वही,	वही,	पृ. 07
20.	वही,	वही,	पृ. 59
21.	वही,	वही,	पृ. 62
22.	वही,	वही,	पृ. 08, 10, 12, 22, 23, 26, 26 30, 34, 28, 64, 70, 81, 113, 194, 198, 200, 201.
23.	वही,	वही,	पृ. 08
24.	वही,	वही,	पृ. 21
25.	वही,	वही,	पृ. 39
26.	वही,	वही,	पृ. 53
27.	वही,	वही,	पृ. 57
28.	वही,	वही,	पृ. 192
29.	वही,	वही,	पृ. 189
30.	वही,	वही,	पृ. 186

अ.नं.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्रमांक
31.	श्रीलाल शुक्ल,	'बिस्रामपुर का संत'	पृ. 82
32.	वही,	वही,	पृ. 202
33.	वही,	वही,	पृ. 35
34.	वही,	वही,	पृ. 32
35.	वही,	वही,	पृ. 89
36.	वही,	वही,	पृ. 83
37.	वही,	वही,	पृ. 82-83
38.	वही,	वही,	पृ. 99
39.	वही,	वही,	पृ. 07
40.	वही,	वही,	पृ. 02
41.	वही,	वही,	पृ. 78
42.	वही,	वही,	पृ. 78
43.	वही,	वही,	पृ. 12
44.	वही,	वही,	पृ. 46
45.	सरोजनी त्रिपाठी,	आधुनिक हिंदी उपन्यासों में वस्तुविन्यास	पृ. 60
46.	जगन्नाथप्रसाद शर्मा	कहानी का रचना विधान	पृ. 153
47.	श्रीलाल शुक्ल,	'बिस्रामपुर का संत'	पृ. 90
48.	वही,	वही,	पृ. 118
49.	वही,	वही,	पृ. 162
50.	डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र,	अज्ञेय का उपन्यास साहित्य	पृ. 237
51.	श्रीलाल शुक्ल,	'बिस्रामपुर का संत'	पृ. 168
52.	वही,	वही,	पृ. 204
53.	वही,	वही,	पृ. 07
54.	वही,	वही,	पृ. 07
55.	वही,	वही,	पृ. 154

अ.नं.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्रमांक
56.	डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र,	अज्ञेय का उपन्यास साहित्य	पृ. 236
57.	श्रीलाल शुक्ल,	'बिस्रामपुर का संत'	पृ. 27
58.	वही,	वहो,	पृ. 28
59.	वही,	वही,	पृ. 28
60.	वही,	वही,	पृ. 29
61.	वही,	वही,	पृ. 29
62.	वही,	वही,	पृ. 35
63.	वही,	वही,	पृ. 50
64.	वही,	वही,	पृ. 89
65.	प्रो. सतीश पांडेय,	'कथाशिल्पी देवेश ठाकूर'	पृ. 127
66.	श्रीलाल शुक्ल,	'बिस्रामपुर का संत'	पृ. 25
67.	वही,	वही,	पृ. 25
68.	वही,	वही,	पृ. 99
69.	वही,	वही,	पृ. 34
70.	वही,	वही,	पृ. 34